IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना और वर्तमान वैश्विक परिदृश्य: सर्वधर्म समभाव, व्यावहारिक वेदांत एवं वैश्विक शांति का दार्शनिक अनुशीलन

कुणाल कुमार सिंह

शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण,बिहार

सारांश(Abstract)

उन्नीसवीं शताब्दी का बंगाल पुनर्जागरण भारतीय इतिहास का वह संक्रांति काल था, जब पाश्चात्य बुद्धिवाद, औपनिवेशिक आधुनिकता और सनातन दार्शनिक परंपराओं के बीच एक गहन वैचारिक संघर्ष छिड़ा हुआ था। इस ऐतिहासिक संक्रांति के केंद्र में स्वामी रामकृष्ण परमहंस (1836–1886) की आध्यात्मिक चेतना का प्रादुर्भाव एक युगघाती घटना के रूप में सामने आया। प्रस्तुत शोध पत्र रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना की तात्विक संरचना, उनके 'धर्म-समन्वय' (सर्वधर्म समभाव), 'विज्ञान' (Vijñāna) के वेदांतिक दर्शन तथा 'शिव ज्ञाने जीव सेवा' के मानवतावादी सिद्धांत का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। वर्तमान इक्कीसवीं सदी का वैश्विक परिदृश्य—जो धार्मिक उग्रवाद, सभ्यतागत संघर्षों, उपभोक्तावादी भौतिकवाद, सामाजिक अलगाव और गंभीर पारिस्थितिक संकट से आक्रांत है—के आलोक में रामकृष्ण की चेतना की प्रासंगिकता का पुनर्मूल्यांकन करना इस अध्ययन का मूल उद्देश्य है। यह अध्ययन प्रतिपादित करता है कि रामकृष्ण परमहंस ने केवल सैद्धांतिक सहिष्णुता (Toleration) का समर्थन नहीं किया, बल्कि अपनी प्रत्यक्ष आध्यात्मिक अनुभूति के आधार पर 'सत्य की सार्वभौमिक स्वीकार्यता' (Acceptance) का जो व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत किया, वह वर्तमान वैश्विक अशांति के निवारण और अंतर-धार्मिक संवाद के लिए एक सार्वकालिक आधार स्तंभ है।

मुख्य शब्द: (KEYWORDS): रामकृष्ण परमहंस, आध्यात्मिक चेतना, सर्वधर्म समभाव, विज्ञान दर्शन, शिव ज्ञाने जीव सेवा, वर्तमान वैश्विक परिदृश्य, सर्वसमावेशिता।

प्रस्तावना (INTRODUCTION)

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में भारतीय उपमहाद्वीप एक अभूतपूर्व बौद्धिक और सांस्कृतिक मंथन के दौर से गुजर रहा था। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विस्तार के साथ आई पाश्चात्य शिक्षा और बुद्धिवाद ने पारंपरिक भारतीय समाज व्यवस्था और धार्मिक मान्यताओं के समक्ष गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े कर दिए थे। इस युगीन संकट के समय बंगाल की भूमि पर विभिन्न सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ, जिनमें ब्राह्मो समाज मुख्य था। इसी वैचारिक उथल-पुथल के बीच कोलकाता के समीप स्थित दक्षिणेश्वर काली मंदिर के एक साधारण पुजारी गदाधर चट्टोपाध्याय—जिन्हें संपूर्ण विश्व ने 'श्री रामकृष्ण परमहंस' के रूप में जाना—की आध्यात्मिक चेतना का प्रस्फुटन हुआ।

रामकृष्ण परमहंस की चेतना की मौलिकता इस बात में निहित थी कि उनका दर्शन किसी पुस्तकीय ज्ञान, शास्त्रीय पांडित्य या बौद्धिक वितंडवाद की देन नहीं था। समाजशास्त्रियों और मानवविज्ञानियों जैसे ई.बी. टाइलर, ब्रॉनिस्लाव मालिनाव्स्की, एमिल दुर्खीम और जॉर्ज सिमेल ने धर्म को अक्सर भय, प्राकृतिक परिघटनाओं को समझने के प्रयास, सामाजिक संबंधों को पवित्र बनाने अथवा अर्थ की खोज के एक सामाजिक उपकरण के रूप में देखा है। इसके सर्वथा विपरीत, रामकृष्ण परमहंस और उनके योग्यतम शिष्य स्वामी विवेकानंद ने धर्म को मानव की अति-इंद्रिय आध्यात्मिक चेतना (Transcendental Spiritual Consciousness) और ईश्वर के प्रत्यक्ष साक्षात्कार के रूप में व्याख्यायित किया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपने कालजयी ग्रंथ *संस्कृति के चार अध्याय* में इस बात को रेखांकित किया है कि भारत की सांस्कृतिक यात्रा विभिन्न जातियों, धर्मों और दर्शनों के समन्वय की यात्रा रही है। रामकृष्ण परमहंस ने इस सांस्कृतिक समन्वय को केवल बौद्धिक स्तर पर स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपने निजी साधना-जीवन में विभिन्न धर्मों का प्रत्यक्ष आचरण करके उसे पुनः प्रामाणिक सिद्ध किया। दार्शनिक हस्टन स्मिथ और इतिहासकार अर्नोल्ड टॉयन्बी के अनुसार, रामकृष्ण का जीवन और संदेश आधुनिक युग में धर्मों के सारभूत एकत्व और सत्यता का सबसे प्रामाणिक साक्ष्य प्रदान करता है। प्राचीन आध्यात्मिक ज्ञान और आधुनिक प्रगतिशील जीवन-शैली के बीच रामकृष्ण परमहंस एक ऐसे सेतु के रूप में विद्यमान हैं, जो आंतरिक रूप से सनातन वेदांत में गहरे जुड़े हुए थे और बाह्य रूप से अत्यंत सर्वसमावेशी व आधुनिक थे।

आध्यात्मिक चेतना का ऐतिहासिक एवं तात्विक धरातल

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना का विकास पश्चिम बंगाल के हूगली जिले में स्थित कमारपुकुर गांव की निर्मल पृष्ठभूमि से आरंभ हुआ। यद्यपि वे पारंपरिक स्कूली शिक्षा से दूर रहे, किंतु उन्होंने भारत की वाचिक परंपरा, कथा-कीर्तन और संतों के संग से वेदों, पुराणों एवं रामायण-महाभारत के मर्म को आत्मसात कर लिया। दक्षिणेश्वर आगमन के पश्चात उनकी आध्यात्मिक साधना ने एक अभूतपूर्व और व्यापक रूप धारण कर लिया।

उनकी साधना की प्रक्रिया भारतीय दार्शनिक इतिहास में अनुपम है क्योंकि उन्होंने किसी एक संप्रदाय तक स्वयं को आबद्ध नहीं रखा। सर्वप्रथम, 1861 से 1863 के मध्य उन्होंने संन्यासिनी भैरवी ब्राह्मोणी के निर्देशन में तंत्र की सभी 64 प्रमुख कठिन साधनाओं को पूरा किया और यह सिद्ध किया कि तंत्र मार्ग का अंतिम लक्ष्य भी चित्त की शुद्धि और जगज्जननी आद्याशक्ति का साक्षात्कार है। इसके उपरांत उन्होंने वैष्णव भक्ति मार्ग के दास्य, वात्सल्य और मधुरादि भावों में निष्ठापूर्वक साधना करके श्रीराधा और श्रीकृष्ण के प्रेमाद्वैत रूप को प्राप्त किया।

वर्ष 1864-65 में नागा संन्यासी तोतापुरी के आगमन ने रामकृष्ण की साधना को अद्वैत वेदांत के अंतिम शिखर तक पहुँचाया। तोतापुरी के मार्गदर्शन में रामकृष्ण ने मात्र तीन दिनों में समस्त नाम और रूप के आवरणों को भेदकर 'निर्विकल्प समाधि' की वह सर्वोच्च अवस्था प्राप्त की, जहाँ 'मैं' और 'परमेश्वर' का द्वैत पूरी तरह समाप्त हो जाता है। इस गैर-द्वैतवादी अनुभव के पश्चात भी उनकी सत्य की खोज समाप्त नहीं हुई। उन्होंने सूफी संत गोविंद रॉय से इस्लाम धर्म की दीक्षा लेकर नमाज़ और इस्लामी साधना पद्धतियों का पालन किया तथा बाद में ईसा मसीह के चित्र का ध्यान करते हुए ईसाई धर्म की आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त की।

स्वामी सारदानंद ने अपने ग्रंथ *श्रीश्रीरामकृष्ण लीलाप्रसंग* में रामकृष्ण की इस बहुआयामी साधना को 'शाक्ताद्वैत' के रूप में विश्लेषित किया है, जिसमें निरूपधिक ब्रह्म और सगुण शक्ति को एक ही परम सत्य के दो पहलू माना गया है। अयान महाराज अपनी विद्वतापूर्ण कृति *इन्फिनिट पाथ्स टू इन्फिनिट रियलिटी* में स्थापित करते हैं कि रामकृष्ण का यह वैश्विक साधना-परीक्षण इतिहास में पहली बार किसी दृष्टा द्वारा किया गया ऐसा प्रयोगात्मक सत्य-साक्षात्कार था, जिसने धर्मों की सार्वभौमिक एकता को केवल विश्वास का विषय न बनाकर एक वैज्ञानिक तथ्य में बदल दिया।

'यतो मत, ततो पथ' एवं सर्वधर्म समभाव का वेदांतिक सिद्धांत

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना की सबसे ऐतिहासिक और क्रांतिकारी परिणति उनके इस सिद्धांत में हुई: **"यतो मत, ततो पथ"** (अर्थात जितने मत, उतने ही मार्ग)। उन्नीसवीं सदी में जब विभिन्न धर्म और संप्रदाय स्वयं को ही मोक्ष का एकमात्र मार्ग घोषित कर रहे थे, रामकृष्ण ने अपने अनुभूत्यात्मक ज्ञान के बल पर यह उद्घोष किया कि दुनिया के सभी धर्म एक ही परमेश्वर तक पहुँचने के अलग-अलग साधन हैं।

इस तात्विक सत्य को जन-सामान्य के बोधगम्य बनाने के लिए रामकृष्ण ने अत्यंत सहज और व्यावहारिक रूपकों का आश्रय लिया:

रामकृष्ण ने जल के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया कि एक ही तालाब से अलग-अलग घाटों पर पानी भरने वाले लोग उसे भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं—कोई उसे 'जल' कहता है, कोई 'पानी', कोई 'वाटर' तो कोई 'अल्लाह' या 'गॉड' के नाम से जोड़ता है। जिस प्रकार शब्द बदलने से जल का मूल तत्व नहीं बदलता, उसी प्रकार भाषा, संस्कृति और कर्मकांड बदलने से ईश्वर का तात्विक स्वरूप नहीं बदलता। इसी प्रकार उन्होंने धर्मों की तुलना एक ही भव्य महल के अलग-अलग कोणों से लिए गए चित्रों से की। जिस तरह विभिन्न कोणों से लिए गए चित्र एक-दूसरे के विरोधी न होकर एक ही इमारत का पूर्ण परिचय देते हैं, उसी तरह विश्व के भिन्न धर्म परम सत्य के पूरक चित्र हैं।

स्वामी भजनानंद ने अपने शोध पत्र में यह अत्यंत स्पष्ट किया है कि रामकृष्ण का सर्वधर्म समभाव केवल 'उदारता' या संकुचित 'धार्मिक सहिष्णुता' (Toleration) नहीं है। 'सहिष्णुता' शब्द में एक प्रकार का अभिमान और दूसरे के प्रति दया का भाव छिपा होता है, मानो हम दूसरे के विचार को त्रुटिपूर्ण मानते हुए भी उसे जीवित रहने की अनुमति दे रहे हों। स्वामी विवेकानंद ने सहिष्णुता को एक प्रकार का ईश-निंदा (Blasphemy) माना और इसके स्थान पर **'पूर्ण स्वीकार्यता' (Acceptance)** का सिद्धांत प्रतिपादित किया। रामकृष्ण की चेतना प्रत्येक धर्म को ईश्वर-प्राप्ति का एक प्रामाणिक और स्वायत्त मार्ग मानकर उसका आदर करती है।

ऑक्सफोर्ड के प्राच्यविद मैक्स मूलर ने 1898 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *रामकृष्ण: हिज लाइफ एंड सेइंग्स* में स्वीकार किया कि रामकृष्ण के 350 से अधिक उपदेश और नीतिकथाएं वेदांत के अत्यंत जटिल सिद्धांतों को सहज लोक-भाषा में प्रस्तुत करती हैं। दार्शनिक ए.एन. व्हाइटहेड के विचार भी रामकृष्ण के इस सार्वभौमिक आध्यात्मिक चेतना के अनुकूल ठहरते हैं कि महान धर्म मनुष्य की गहरी धार्मिक चेतना के उद्भव के ही परिणाम हैं।

'विज्ञान' की दार्शनिक अवधारणा: नित्य और लीला का तात्विक एकीकरण

दार्शनिक चिंतन के क्षेत्र में रामकृष्ण परमहंस का सबसे मौलिक योगदान उनका **'विज्ञान' (Vijñāna)** का दर्शन है। पारंपरिक अद्वैत वेदांत (विशेष रूप से शंकराचार्य के अद्वैत) में संसार को 'माया' या अनित्य मानकर उसका निषेध किया जाता है ("नेति, नेति") और केवल निर्गुण ब्रह्म को ही सत्य माना जाता है। रामकृष्ण ने ज्ञान की इस पारंपरिक सीमा को पार करते हुए 'विज्ञान' की एक नई और पूर्ण दार्शनिक अवस्था की व्याख्या की।

रामकृष्ण के अनुसार 'ज्ञान' और 'विज्ञान' में सूक्ष्म किंतु गहरा अंतर है:

'ज्ञानी' वह साधक है जो विचार और विवेक के द्वारा यह जान लेता है कि जगत् असत्य है और ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है; वह समाधि में ब्रह्म का अनुभव करके जगत् का बाध कर देता है। परंतु 'विज्ञानी' वह सिद्ध पुरुष है जो निर्विकल्प समाधि के अद्वैत अनुभव के उपरांत पुन: चेतना के निचले स्तर पर (सापेक्ष जगत् में) लौटता है और यह अनुभव करता है कि जो परब्रह्म 'नित्य' (Absolute) है, वही इस दृश्यमान जगत्, प्रकृति और जीवों के रूप में 'लीला' (Relative) कर रहा है। विज्ञानी पुरुष के लिए नित्य और लीला दोनों ही एक ही परम सत्य के दो रूप हैं।

महेंद्रनाथ गुप्त ('म') द्वारा रचित *श्रीश्रीरामकृष्ण कथामृत* (जिसका स्वामी निखिलानंद ने अंग्रेजी में *द गॉस्पेल ऑफ श्री रामकृष्ण* नाम से अनुवाद किया) में रामकृष्ण के इस विज्ञान दर्शन के अनगिनत प्रमाण मिलते हैं। प्रसिद्ध लेखक ऑल्डस हक्सले ने *कथामृत* को संत-साहित्य के इतिहास में अद्वितीय माना है क्योंकि यह किसी ज्ञानी के मुख से निकले हुए जीवंत और प्रत्यक्ष वेदांतिक अनुभवों का प्रमाणिक दस्तावेज़ है। 'विज्ञान' का यह सिद्धांत मनुष्य को संसार से भागने (Escapism) की अनुमति नहीं देता, बल्कि संसार के प्रत्येक कण में ईश्वर की उपस्थिति देखकर संसार में रहते हुए ही निष्काम कर्म करने की प्रेरणा देता है।

'शिव ज्ञाने जीव सेवा' और सामाजिक पुनर्जागरण

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना केवल व्यक्तिगत समाधि और आत्म-मुक्ति (Moksha) तक सीमित नहीं थी; उसमें संपूर्ण मानवता के दुख-निवारण की एक तीव्र आकुलता समाहित थी।

दक्षिणेश्वर में एक दिन भक्तों को उपदेश देते हुए जब यह बात आई कि वैष्णव धर्म में 'जीवों पर दया' करने का निर्देश दिया गया है, तो रामकृष्ण भावसमाधि में निमग्न हो गए। समाधि से उतरकर उन्होंने कड़े शब्दों में कहा:

"जीव पर दया? तू क्षुद्र जीव होकर ईश्वर द्वारा निर्मित जीव पर दया करने वाला कौन होता है? दया नहीं, शिव ज्ञान से जीव की सेवा करो!"

यह छोटा सा वाक्य भारतीय समाज-सुधार आंदोलन के इतिहास में एक युगगाती मोड़ सिद्ध हुआ। इसने पारंपरिक 'दया' या 'दान' (जिसमें दाता के भीतर श्रेष्ठता का अहंकार होता है) की अवधारणा को पूरी तरह बदलकर उसे 'ईश्वर की पूजा' के रूप में स्थापित कर दिया। स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु के इसी महावाक्य को आधार बनाकर 'रामकृष्ण मिशन' का संस्थागत ढांचा तैयार किया और **"आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च"** (स्वयं के मोक्ष और जगत् के कल्याण के लिए) का अमर ध्येय वाक्य दिया।

रामकृष्ण की सामाजिक चेतना उनके दैनिक जीवन के व्यवहार में पूरी तरह दृष्टिगोचर होती थी:

ब्राह्मण कुल में जन्म लेने के बाद भी, जाति-व्यवस्था के अहंकार को पूरी तरह नष्ट करने के लिए रामकृष्ण ने समाज के सबसे वंचित और अछूत माने जाने वाले वर्गों के शौचालयों को अपने लंबे केशों से साफ किया। उन्होंने कंचन (धन) के प्रति मनुष्य के अंध-मोह को समाप्त करने के लिए एक हाथ में मिट्टी और दूसरे हाथ में सोने-चांदी के सिक्के लेकर "टका माटी, माटी टका" (पैसा मिट्टी है, मिट्टी पैसा है) कहते हुए दोनों को गंगा में विसर्जित कर दिया।

स्त्री-सशक्तिकरण और सम्मान के क्षेत्र में रामकृष्ण ने जो उदाहरण प्रस्तुत किया, वह इतिहास में विरला है। वर्ष 1872 की फलहारिणी कालिका पूजा की रात्रि में उन्होंने अपनी 19 वर्षीया पत्नी शारदा देवी को जगज्जननी के आसन पर बैठाकर 'षोडशी पूजा' की और अपने साधना का संपूर्ण फल उनके चरणों में अर्पित कर दिया। उन्होंने विवाह के भौतिक संबंध को एक अत्यंत निर्मल, पवित्र और आध्यात्मिक सहचर्य में बदल दिया और समाज को यह संदेश दिया कि प्रत्येक नारी साक्षात जगदंबा का ही स्वरूप है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य: बहुआयामी संकट और वैचारिक विभाजन

21वीं सदी का वर्तमान विश्व एक ओर जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, अंतरिक्ष अनुसंधान और वैश्वीकरण के अभूतपूर्व शिखर पर है, वहीं दूसरी ओर मानव सभ्यता अनेक आंतरिक एवं बाह्य संकटों के कगार पर खड़ी है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य की प्रमुख चुनौतियों का तात्विक विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं में किया जा सकता है:

धार्मिक कट्टरता और आतंकवाद आज के समय में अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए सबसे बड़ा संकट बने हुए हैं। दुनिया के विभिन्न भागों में 'केवल मेरा धर्म ही सत्य है' (Religious Exclusivism) की हठधर्मिता के कारण हिंसा, रक्तपात और सामाजिक ध्रुवीकरण बढ़ रहा है। संकीर्ण सांप्रदायिकता ने मानव-मानव के बीच अभेद्य दीवारें खड़ी कर दी हैं। इसके साथ ही, सैम्युअल हंटिंगटन द्वारा प्रतिपादित 'सभ्यताओं का टकराव' (Clash of Civilizations) आज भू-राजनीतिक मोर्चे पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। पूर्व और पश्चिम के बीच बढ़ता वैचारिक तनाव, उग्र राष्ट्रवाद और नस्लीय हिंसा विश्व को पुनः युद्धों की ओर धकेल रही है।

आधुनिक पूँजीवादी और उपभोक्तावादी संस्कृति ने मनुष्य को केवल एक 'उपभोक्ता' बनाकर छोड़ दिया है। धन-संपदा, बाह्य प्रदर्शन और भौतिक सुखों की अंधी दौड़ ने नैतिक और मानवीय मूल्यों को नष्ट कर दिया है। इसके दुष्परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर अवसाद, एकाकीपन, मानसिक अशांति और आत्मीयता की शून्यता बढ़ती जा रही है। दूसरी ओर, प्रकृति को केवल भोग की वस्तु मानने की पश्चिमी औद्योगिक दृष्टि के कारण आज संपूर्ण पृथ्वी जलवायु परिवर्तन, वैश्विक तापन (Global Warming) और जैव-विविधता के विनाश के मुहाने पर खड़ी है। प्रकृति के संतुलन को छिन्न-भिन्न करने की इस प्रवृत्ति ने मानव के अस्तित्व पर ही संकट खड़ा कर दिया है।

वैश्वीकरण के युग में रामकृष्ण-दर्शन का अनुप्रयोग एवं भावी परिप्रेक्ष्य

इक्कीसवीं सदी के इस बहुआयामी वैश्विक संकट के समाधान में रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना एक अत्यंत व्यावहारिक, वैज्ञानिक और भावी-उन्मुख मार्ग प्रस्तुत करती है।

रामकृष्ण का सिद्धांत "यतो मत, ततो पथ" आज के धार्मिक उग्रवाद का एकमात्र तार्किक और आध्यात्मिक समाधान है। यदि वैश्विक स्तर पर विभिन्न धर्मों के अनुयायी यह समझ लें कि धर्म का बाह्य ढांचा भिन्न हो सकता है, परंतु आंतरिक आध्यात्मिक सत्य एक ही है, तो अंतर-धार्मिक विद्वेष स्वतः समाप्त हो जाएगा। यह चेतना संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अंतर्राष्ट्रीय निकायों द्वारा चलाए जा रहे 'सभ्यताओं के बीच संवाद' (Dialogue Among Civilizations) को एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान करती है।

पारिस्थितिक संकट के संदर्भ में, रामकृष्ण का 'विज्ञान' दर्शन एक क्रांतिकारी पारिस्थितिक वेदांत (Ecological Vedanta) की नींव रखता है। जब मनुष्य यह अनुभव करेगा कि संपूर्ण जगत् और प्रकृति परब्रह्म की ही जीवंत 'लीला' है, तो वह प्रकृति का विनाश करने के स्थान पर उसका आदर और संवर्धन करेगा। यह विचार सतत विकास (Sustainable Development) के लिए नैतिक चेतना प्रदान करता है।

इसी प्रकार, 'शिव ज्ञाने जीव सेवा' का सिद्धांत आधुनिक मानवाधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय कल्याणकारी योजनाओं को एक पवित्र आयाम प्रदान करता है। जब निर्धन, शरणार्थी, बीमार और शोषित वर्ग की सेवा 'दया' के भाव से न करके 'ईश्वर की पूजा' मानकर की जाएगी, तब समाज से वर्ग-भेद, नस्लवाद और सामाजिक विषमता का उन्मूलन संभव हो सकेगा। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा था कि रामकृष्ण परमहंस का जीवन हमें ईश्वर को आमने-सामने देखने और धर्म को व्यावहारिक रूप से जीने की प्रेरणा देता है।

अवधारणात्मक एवं व्यावहारिक तुलनात्मक विश्लेषण

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना, पारंपरिक संकीर्ण दृष्टिकोणों तथा वर्तमान वैश्विक परिदृश्य के मध्य तुलनात्मक अध्ययन को निम्नलिखित सारणी में संरचनात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है:

विश्लेषण के आयाम	पारंपरिक / संकीर्ण दृष्टिकोण	रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अनुप्रयोग व प्रासंगिकता
धार्मिक दृष्टिकोण	धार्मिक एकाधिकारवाद: "केवल मेरा मार्ग सत्य है, अन्य सभी असत्य व त्याज्य हैं।"	सार्वभौमिक स्वीकार्यता: "यतो मत, ततो पथ।" सभी धर्म एक ही ईश्वर तक पहुँचने के वैध मार्ग हैं।	वैश्विक धार्मिक उग्रवाद, आतंकवाद और सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का स्थायी अंत।
संसार के प्रति तात्विक दृष्टि	द्वैतवादी पलायनवाद: संसार को पूर्णतः असत्य/पाप मानकर उससे भागना या केवल भोगना।	'विज्ञान' दर्शन: संसार निरूपधिक ब्रह्म की ही गतिशील 'लीला' है; नित्य और लीला का सामंजस्य।	भौतिक प्रगति और आध्यात्मिक शांति में संतुलन; प्रकृति के प्रति पूज्य भाव (पारिस्थितिक संरक्षण)।
सामाजिक सेवा का भाव	'दया' या 'परोपकार': दाता के अहंकार से युक्त अनुकंपा, जिसमें याचक को हीन समझा जाता है।	'शिव ज्ञाने जीव सेवा': प्रत्येक पीड़ित व वंचित प्राणी में साक्षात ईश्वर का दर्शन कर सेवा।	मानवाधिकारों की वास्तविक रक्षा, सामाजिक समरसता और गरिमापूर्ण वैश्विक कल्याणकारी नीतियां।
सहिष्णुता का स्वरूप	संकुचित सहिष्णुता (Toleration): दूसरे के धर्म/विचार को त्रुटिपूर्ण मानते हुए भी सहन करना।	सर्व-स्वीकार्यता (Acceptance): प्रत्येक मार्ग की आंतरिक प्रामाणिकता का सहर्ष आदर।	बहुसांस्कृतिक (Multicultural) एवं बहु-धार्मिक समाजों में वास्तविक शांति व बंधुत्व की स्थापना।
ज्ञान प्राप्ति का स्रोत	शुष्क पुस्तकीय ज्ञान, शास्त्रार्थ, अंधविश्वास या	प्रत्यक्ष अनुभूत्यात्मक साक्षात्कार (Direct Mystical Experience)	सैद्धांतिक धार्मिकता के स्थान पर अनुभूतिमूलक,

विश्लेषण के आयाम	पारंपरिक / संकीर्ण दृष्टिकोण	रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में अनुप्रयोग व प्रासंगिकता
	केवल बौद्धिक तर्क-वितर्क।	और प्रयोगात्मक साधना।	वैज्ञानिक और व्यावहारिक अध्यात्म की पुनर्स्थापना।
स्त्री के प्रति दृष्टिकोण	पितृसत्तात्मक संकीर्णता; नारी को केवल भोग्या, आश्रित या द्वितीय श्रेणी का मानना।	मातृभाव: प्रत्येक नारी में साक्षात जगज्जननी आद्याशक्ति का दर्शन (षोडशी पूजा का आदर्श)।	वैश्विक महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समता और स्त्रियों की आध्यात्मिक व सामाजिक गरिमा की सुरक्षा।

निष्कर्ष (CONCLUSION)

रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक चेतना केवल उन्नीसवीं शताब्दी के बंगाल पुनर्जागरण की एक ऐतिहासिक घटना मात्र नहीं है, अपितु यह मानव सभ्यता के समकालीन और भावी संकटों के निवारण हेतु एक सार्वभौमिक दार्शनिक मार्गदर्शक है। उन्होंने धर्म को शास्त्रीय जटिलताओं और संकीर्ण बाह्य आडंबरों से मुक्त करके उसे प्रत्यक्ष आंतरिक अनुभूति, प्रेम और मानव-सेवा के धरातल पर पुनर्स्थापित किया।

वर्तमान 21वीं सदी का विश्व, जो तकनीकी दृष्टि से अभूतपूर्व रूप से जुड़ा हुआ है किंतु वैचारिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत खंडित है, के लिए रामकृष्ण का 'सर्वधर्म समभाव' और 'विज्ञान दर्शन' एक संजीवनी के समान है। उनका जीवन यह प्रमाणित करता है कि विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और विचारधाराओं के बीच का विरोध वास्तविक नहीं बल्कि सतही है; आंतरिक धरातल पर संपूर्ण मानवता एक ही अद्वैत चेतना से संचालित है।

जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार) के इतिहास विभाग के इस शोध अध्ययन का यह सुस्पष्ट निष्कर्ष है कि यदि वर्तमान वैश्विक समुदाय को धार्मिक उग्रवाद, पर्यावरण विनाश और नैतिक पतन के त्रिविध संकटों से मुक्त होना है, तो उसे रामकृष्ण परमहंस द्वारा दिखाए गए 'यतो मत, ततो पथ' और 'शिव ज्ञाने जीव सेवा' के सिद्धांतों को अपनी सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षणिक नीतियों में समाविष्ट करना ही होगा। रामकृष्ण की आध्यात्मिक चेतना प्राचीन भारतीय मनीषा और आधुनिक विश्व दृष्टि के मध्य वह अविचल सेतु है, जो संपूर्ण विश्व को एक शांतिपूर्ण, समरस और आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध 'वैश्विक कुटुंब' में बदलने का सामर्थ्य रखती है।

संदर्भ-सूची (References)

1. आत्माश्रद्धानंद, स्वामी। *जॉय ऑफ स्पिरिचुअलिटी: श्री रामकृष्णस मैसेज ऑफ इनर जॉय*। श्री रामकृष्ण मठ, 2012।
2. ईशरवुड, क्रिस्टोफर। *रामकृष्ण एंड हिज डिसिपल्स*। साइमन एंड शुस्टर, 1965।
3. कबीर, हुमायूँ। *अवर हेरिटेज*। एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1947।
4. गुप्त, महेंद्रनाथ (श्री 'म')। *श्री श्री रामकृष्ण कथामृत* (खंड 1-5)। अनुवादक ईश्वरदेवी गुप्ता, कथामृत भवन, 1942।
5. गंभीरानंद, स्वामी। *युगाचार्य विवेकानंद*। अद्वैत आश्रम, 1990।
6. दिनकर, रामधारी सिंह। *संस्कृति के चार अध्याय*। लोकभारती प्रकाशन, 1956।
7. नेहरू, जवाहरलाल। *हिंदुस्तान की कहानी* (*द डिस्कवरी ऑफ इंडिया*)। सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 2001।
8. नीवेल, वॉल्टर जी.। *श्री रामकृष्ण एंड स्वामी विवेकानंद: स्टडीज इन द रिलिजियस चेंज ऑफ मॉडर्न इंडिया*। वेस्टविंड प्रेस, 1976।
9. भजनानंद, स्वामी। *हार्मोनी ऑफ रिलिजन्स फ्रॉम द स्टैंडपॉइंट ऑफ श्री रामकृष्ण एंड स्वामी विवेकानंद*। रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, 2008।
10. भूतेशानंद, स्वामी। *श्रीरामकृष्ण भावधारा*। अद्वैत आश्रम, 1998।
11. महाराज, अयान। *इन्फिनिट पाथ्स टू इन्फिनिट रियलिटी: श्री रामकृष्णस क्रॉस-культурल फिलॉसफी ऑफ रिलीजन*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2018।

12. मूलर, एफ. मैक्स। *रामकृष्ण: हिज लाइफ एंड सेइंग्स*। फॉर्गॉटन बुक्स, 2008।
13. राय, निर्बेद। *स्वामी विवेकानंद: ए पिक्टोरियल ट्रिब्यूट*। द एशियाटिक सोसाइटी, 2012।
14. रोलैंड, रोम्यां। *द लाइफ ऑफ रामकृष्ण*। अनुवादक ई.एफ. माल्कम-स्मिथ, अद्वैत आश्रम, 1930।
15. विवेकानंद, स्वामी। *स्वामी विवेकानंद का संपूर्ण साहित्य* (खंड 1-9)। अद्वैत आश्रम, 1997।
16. सारदानंद, स्वामी। *श्रीश्रीरामकृष्ण लीलाप्रसंग* (खंड 1-2)। उद्बोधन कार्यालय, रामकृष्ण मठ, 1920।
17. स्मरणांनद, स्वामी। *श्रीरामकृष्ण एंड हिज डिवाइन प्ले*। रामकृष्ण मठ, 2005।
18. स्मिथ, हस्टन। *द वर्ल्ड्स रिलिजन्स: अवर ग्रेट विजडम ट्रेडिंशन्स*। हार्पर वन, 1991।
19. टॉयनबी, अर्नोल्ड जे.। *एन ओरिएंटलिस्ट्स अप्रोच टू रिलिजन*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1956।
20. हक्सले, ऑल्डस। *द पैरेनियल फिलॉसफी*। हार्पर एंड ब्रदर्स, 1945।
21. हिक्सन, लेक्स। *ग्रेट स्वान: मीटिंग्स विथ रामकृष्ण*। मोतीलाल बनारसीदास, 1997।
22. व्हाइटहेड, अल्फ्रेड नॉर्थ। *रिलिजन इन द मेकिंग*। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1926 ।